अजराड़ा घराने के सुप्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब के वादन में प्रयुक्त कायदों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा से संगीत में (पी एच० डी०)

उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत

शोध–प्रबन्ध की

रुपरेखा

2019

निर्देशक

डॉ० शिवेन्द्र प्रताप त्रिपाठी

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

संगीत विभाग

शोधकर्त्री

कल्याणी गुप्ता

संगीत विभागाध्यक्षा

प्रो० सुभद्रा कुमारी सतसंगी

संकाय प्रमुख

प्रो० जे० के० वर्मा

कला संकाय (संगीत विभाग)

दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा

अजराड़ा घराने के सुप्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब के वादन में प्रयुक्त कायदों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

भूमिका

"गीतम् वाद्यम् तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते"

संगीत संस्कृत भाषा का शब्द है। संगीत शब्द का अर्थ "सम्यक् रुप से सुशोभित गान" है अर्थात् जिसे गायन, वादन और नर्तन द्वारा सम्पूर्णता प्रदान की गयी है। जिसमें गीत की उपयुक्त ताल वाद्य पर संगति की जाए और उस पर भाव भी प्रदर्शित किया जाए, तो उसे संगीत कहते है।

प्राचीन काल से ही संगीत में गायन, वादन व नृत्य के साथ वाद्यों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। वाद्य संगीत को नियन्त्रित करते है। संगीत की सभी विधाओं चाहे वह गायन हो, वादन हो व नृत्य तीनों में ही में ताल वाद्यों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। ताल संगीत को एक निश्चित नियम या समय के बंधन में बांधता है तथा संगीत को सुन्दर, कर्णप्रिय एवं प्रभावपूर्ण बनाने हेतु ताल वाद्यों का प्रयोग आवश्यक है। गायन, वादन व नृत्य के साथ ताल अवनद्ध वाद्य के माध्यम से दी जाती है। वर्तमान में सर्वाधिक प्रचलित, प्रतिष्ठित, लोकप्रिय ताल–वाद्य "तबला" है।

तबला वादन की कला का विकास गुरु–शिष्य परम्परा के माध्यम से हुआ है। गुरु–शिष्य परम्परा का परिवर्तित रुप घरानों के माध्यम से स्पष्ट होता है। घरानों से तात्पर्य रीति, पद्धति या शैली से है। संगीत जगत में गायन, वादन व नृत्य के विविध घराने माने गये है और तबले के सर्वप्रथम घराने का विकास उस्ताद सिद्धार खाँ ढाढ़ी द्वारा हुआ। तत्पश्चात् इसी घराने के शिष्य, प्रशिष्यों द्वारा अन्य घरानों का निर्माण हुआ तथा तबले के छः घराने हुए, जो कि इस प्रकार हैं–

1) दिल्ली घराना, 2) अजराड़ा घराना, 3) लखनऊ घराना,

4) फर्रुखाबाद घराना, 5) बनारस घराना, 6) पंजाब घराना।

तबला वादन के क्षेत्र में दिल्ली घराना सर्वप्रथम घराना है। दिल्ली घराने के प्रवर्तक 'उस्ताद सिद्धार खाँ ढाढ़ी' है। उस्ताद सिद्धार खाँ ढाढ़ी के पुत्र उस्ताद बुगरा खाँ, उस्ताद घसीट खाँ, नाम अज्ञात तथा उनके अनुज उस्ताद चाँद खाँ तथा वंश एवं शिष्यों ने दिल्ली घराने की परम्परा को विकसित किया। दिल्ली घराने कि संस्थापक उस्ताद सिद्धार खाँ ढाढ़ी के तीसरे पुत्र जिनका नाम अज्ञात है, के तीन पुत्र हुए। उस्ताद मोदू खाँ, उस्ताद बख्शू खाँ व उस्ताद मक्कू खाँ। उस्ताद मोदू खाँ व उस्ताद बख्शू खाँ ने तबले के लखनऊ घराने की नींव डाली। लखनऊ घराने से दो शाखाएं और विकसित हुई, जो कि फर्रुखाबाद घराना व बनारस घराना है। फर्रुखाबाद घराना जिसके संस्थापक उस्ताद हाजी विलायत अली खाँ और बनारस घराना जिसके संस्थापक पं० रामसहाय जी है। पंजाब घराना एक स्वतन्त्र घराना है और पंजाब घराने के संस्थापक लाला भवानीदास हैं। दिल्ली घराने के संस्थापक उस्ताद सिद्धार खाँ ढाढ़ी के पौत्र उस्ताद सिताब खाँ के शिष्य उस्ताद कल्लू खाँ व उस्ताद मीरु खाँ ने तबले के अजराड़ा घराने की स्थापना की। उस्ताद कल्लू खाँ, उस्ताद मीरु खाँ उत्तर प्रदेश के मेरठ जिले के अजराड़ा नामक गाँव के मूल निवासी थे। उनके गाँव के नाम पर ही अजराड़ा घराने की स्थापना हुई।

तबले के अजराड़ा घराने की परम्परा में एक से बढ़कर एक तबला विद्वान हुए हैं, जिनमें प्रमुख हैं– उस्ताद मोहम्मदी बख्श, उस्ताद चाँद खाँ, उस्ताद काले खाँ, उस्ताद कुतुब बख्श, उस्ताद हस्सू खाँ, उस्ताद शम्मू खाँ, उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ, उस्ताद मंजू खाँ, उस्ताद हशमत अली खाँ व उस्ताद अकरम खाँ इत्यादि है। उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ तबला वादन के अग्रणी कलाकार रहे हैं एवं अजराड़ा घराने के प्रतिष्ठित कलाकारों में उनका नाम लिया जाता है। उन्होंने अपने पिता उस्ताद शम्मू खाँ तथा दिल्ली घराने के उस्ताद नत्थू खाँ से तबला वादन की शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने अपनी मौलिक प्रतिभा, सूझ–बूझ, चिन्तन–मनन, वादन शैली, योग्यता एवं वादन विशेषताओं के माध्यम से तबला वादन के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान बनाया और अजराड़ा घराने के शिखर–पुरुष बन गये।

<u>विषय का प्रादुर्भाव</u>– उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब के व्यक्तित्व, कृतित्व और संगीत के क्षेत्र में उनके योगदान की जानकारी तो प्राप्त होती है, परन्तु उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब द्वारा बजाई गई बन्दिशों

एवं उनमें प्रमुख रुप से उनके स्वतन्त्र वादन में कायदों पर पूर्ण रुप से जानकारी प्राप्त नहीं होती है। शोध छात्रा स्वयं भी तबले की विद्यार्थी है तथा उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब की वादन शैली से अत्यधिक प्रभावित रही है। अतः शोध छात्रा में उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब के वादन में प्रयुक्त कायदें एवं उसमें निहित विशेषताओं के विषय में जानकारी प्राप्त करने की उत्कण्ठा जाग्रत हुई तथा अपनी जिज्ञासाओं की पूर्ति हेतु शोध छात्रा द्वारा तत् सम्बन्धी साहित्य का सर्वेक्षण किया गया है, जो कि इस प्रकार है–

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण–

पुस्तकें–

- तबला पुराण– मिश्र, पं० विजयशंकर
- ताल प्रबन्ध– मिश्र, पं० छोटे लाल
- ताल कोश– श्रीवास्तव, श्री गिरीश चन्द्र
- तबला एवं पखावज के घराने एवं परम्पराएं– मिस्त्री, डॉ० आबान ई०
- तबला विशारद– त्रिपाठी, डॉ० शिवेन्द्र प्रताप

शोध प्रबन्ध– (पी एच० डी०)–

- अजराड़ा घराने की विधिवत तबला–वादन परम्पराः एक अध्ययन– व्यंकटेश, अजय– महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, 2004

(एम० फिल०)–

- अजराड़ा घराने के सुप्रसिद्ध कलाकार 'उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब' व्यक्तित्व एवं कृतित्व– शर्मा, सुयश– दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट
- तबला वादन के क्षेत्र में मुनीर खाँ साहब का योगदान– कुमारी, नीतू– दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट

पत्र–पत्रिकाएं–

- घराना: एक अध्ययन– मिश्र, विजय शंकर– दिसम्बर 2008
- अजराड़ा घराने के तबला महर्षि 'प्रो० सुधीर कुमार सक्सेना जी'– भावसार, डॉ० गौराग– जुलाई 2009
- दिल्ली एवं अजराड़ा घराने के तबला वादन शैली का तुलनात्मक अध्ययन– अष्टपुत्रे, डॉ० अजय व्यं०– जनवरी 2005

उपर्युक्त वर्णित विवरणों व शोध छात्रा के संज्ञान में आये अब तक हुए शोध कार्यों को दृष्टिगत रखते हुए यह कहा जा सकता है कि शोध कार्यों में विभिन्न कलाकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अनेक कार्य हो चुके हैं, साथ ही उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर भी शोध कार्य हो चुका है। तथापि उनके वादन शैली में विशिष्ट रुप से उनके वादन में प्रयुक्त कायदों पर कार्य नहीं हुआ तथा उनके वादन में प्रयुक्त कायदों के विषय में जानकारी प्राप्त करने हेतु शोध छात्रा द्वारा इस विषय को शोध के लिए चुना गया है–

समस्या कथन–"अजराड़ा घराने के सुप्रसिद्ध तबला वादक उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब के वादन में प्रयुक्त कायदों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या–

- **उस्ताद** (पु०, फा०)

भाषा शब्द कोश के अनुसार– गुरु, शिक्षक, अध्यापक।

बृहत हिन्दी कोश के अनुसार– गुरु, शिक्षक।

- **वादन** (पु० सं०)

मानक विशाल हिन्दी शब्द कोश के अनुसार– कहना, बोलना, बाजा बजाने वाला, बाजा बजाना।

बृहत हिन्दी कोश के अनुसार–बाजा बजाने वाला, बाजा बजाना।

- **कायदा** (सं० पु०)

हिन्दी शब्द कोश के अनुसार– नियम, ढंग, तरीका, विधान, कानून, तौर–तरीका।

बृहत हिन्दी कोश के अनुसार– नियम, ढंग, विधान, क्रम।

- **विश्लेषण** (पु० सं०)

मानक विशाल हिन्दी शब्द कोश के अनुसार– किसी चीज के अंगों को या उसके अलग–अलग गुणों को स्पष्ट करना।

हिन्दी शब्द कोश के अनुसार– अलग करना, छान बीन करना।

अध्ययन के उद्देश्य– प्रस्तुत शोध–कार्य के उद्देश्य इस प्रकार हैं–

1) अजराड़ा घराना और उसकी वादन विशेषताओं का अध्ययन करना।

2) अजराड़ा घराने के उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब के जीवन–वृत एवं शिष्य परम्परा का अध्ययन करना।

3) उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब के वादन में प्रयुक्त कायदों का विस्तारशील अध्ययन करना।

4) उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब के वादन में प्रयुक्त कायदों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

परिसीमांकन– प्रस्तुत शोध–कार्य की समय सीमा को देखते हुए विषय के अध्ययन हेतु उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब के 20 कायदों का विश्लेषणात्मक अध्ययन तक ही सीमित रहेगा। उदाहरण स्वरुप दो कायदे इस प्रकार है–

तीनताल– कायदा नं०–1

धिंऽऽ	धागिन	धात्रक	धागिन	धात्रक	धिनाग	धिनधी	नागीना
धात्रक	धागिन	धिंऽऽ	धागिन	धात्रक	धिनागे	तिनती	नाकीना
तिंऽऽ	तकिन	तात्रक	ताकिन	तात्रक	तिनाके	तिनती	नाकीना
धात्रक	धागिन	धिंऽऽ	धागिन	धात्रक	धिनागे	धिनधी	नागीना

तीनताल– कायदा नं०–2

घेड़नग	धिनधागे	नगधिन	नगतेटे	धागेनाधा	त्रकधिंऽ	धागेत्रक	धिंनागीना
धागेनागे	धिननग	नगधिन	नगतेटे	धागेनाधा	त्रकधिंऽ	धागेत्रक	तिंनाकीना
केड़नक	थ्तनताके	नकतिन	नकतेटे	ताकेनाता	त्रकतिंऽ	ताकेत्रक	तिंनाकीना
धागेनागे	धिननग	नगधिन	नगतेटे	धागेनाधा	त्रकधिंऽ	धागेत्रक	धिंनागीना

अध्ययन विधि– प्रस्तुत शोध–कार्य वर्णनात्मक विधि, विश्लेषणात्मक विधि, साक्षात्कार व सर्वेक्षण के माध्यम से सम्पन्न किया जायेगा।

अध्ययन के स्रोत– प्रस्तुत शोध–कार्य पुस्तकालय, पत्र–पत्रिकाओं, दृश्य–श्रव्य सामाग्री, ग्रन्थकारों व विद्वानों से विचार–विमर्श तथा इण्टरनेट पर उपलब्ध सामाग्री के माध्यम से पूर्ण किया जायेगा।

अध्ययन की रुपरेखा–

भूमिका

प्रथम अध्याय– सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

- पुस्तकें
- शोध–प्रबन्ध

- पत्र–पत्रिकाएं

द्वितीय अध्याय– तबले का अजराड़ा घराना

- अजराड़ा घराना– एक परिचय
- अजराड़ा घराने की शिष्य परम्परा
- अजराड़ा घराने की वादन शैली की विशेषताएँ

तृतीय अध्याय– उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब का जीवन–वृत एवं वादन शैली

- पारिवारिक पृष्ठभूमि
- सांगीतिक शिक्षा
- संगीत के क्षेत्र में योगदान
- वादन शैली
- शिष्य परम्परा

चतुर्थ अध्याय– उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब के वादन में प्रयुक्त कायदें

- कायदा– व्याख्या एवं महत्व
- कायदे एवं उनका विस्तार सहित लेखन

पंचम अध्याय– उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब के वादन में प्रयुक्त कायदों का विश्लेषण

उपसंहार

शोध का महत्व– प्रस्तुत शोधकार्यों, पुस्तकों, व पत्रिकाओं में उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब के जीवन–परिचय, संगीत के क्षेत्र में उनके योगदान के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। किन्तु कहीं पर भी उनके वादन में प्रयुक्त कायदों के विषय में जानकारी प्राप्त नहीं हुई। अतः शोधा छात्रा द्वारा किया

जा रहा यह शोध कार्य सर्वधा नवीन है तथा इस शोध–कार्य के माध्यम से भविष्य में विद्यार्थियों को उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब द्वारा बजाये गये पारम्परिक एवं घरानेदार कायदे सविस्तार प्राप्त हो सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

क्रम सं०	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम
1	तबला पुराण	मिश्र, पं० विजय शंकर
2	ताल प्रबन्ध	मिश्र, पं० छोटे लाल
3	तबला एवं पखावज के घराने एवं परम्पराएं	मिस्त्री, डॉ० आवान ई०
4	तबला विशारद	त्रिपाठी, डॉ० शिवेन्द्र प्रताप
5	ताल कोश	श्रीवास्तव, श्री गिरीश चन्द्र